❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मेधामयासिषम्।

सामवेद 171

मैं धारणावती बुद्धि को प्राप्त करूँ।

May I attain superior intellect.

वर्ष 42, अंक 23 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 29 अप्रैल, 2019 से रविवार 5 मई, 2019

विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120

दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8

दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.orgèaryasandesh

ब्रिटिश सरकार के काले कानून 'रोलेट एक्ट' का विरोध 30 मार्च, 1919

आर्यसमाज के नेता अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा रोलेट एक्ट के विरोध का शताब्दी समारोह का शुभारम्भ

30 मार्च 1919 को स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान, रोलेट कानून के विरोध में ब्रिटिश सैनिकों की संगीनों के सामने स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना सीना खोलकर चुनौती देते हुए, विदेशी साम्राज्य की जड़ों को उखाड़ फैंकने के लिए हर भारतीय के हृदय में देश प्रेम की भावना जाग्रत कर वीर स्वतन्त्रता सैनानियों के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया।

इस ऐतिहासिक घटना की शताब्दी पर 'रोलेट एक्ट विरोध शताब्दी समारोह' का आयोजन प्रातः 9.15 से 11.30 बजे, 30 मार्च, 2019 को टाउन हाल, चाँदनी चौक, दिल्ली - 6 के प्रागंण में पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की अध्यक्षता में हुआ। स्वामी प्रवणानन्द, आचार्य वीरेन्द्र विक्रम व आचार्य योगेन्द्र यज्ञिक, सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, उप प्रधान श्री ओमप्रकाश आर्य व श्री शिवकुमार मदान, महामन्त्री श्री विनय आर्य, कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल, श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता, श्री सुरेन्द्र आर्य व श्री सुखबीर सिंह आर्य, श्रीमती बाला चौधरी, अध्यक्षा, आर्य विद्या मन्दिर, आर्य केन्द्रीय सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री सुरेंद्र कुमार रैली, उपप्रधान श्रीमती उषा किरण कथूरिया, श्री विक्रम नरुला व श्री राजेंद्र दुर्गा, महामन्त्री श्री सतीश चड्ढा, कोषाध्यक्ष श्री अरुण प्रकाश वर्मा, श्री एस. पी सिंह, श्रीमती प्रकाश कथूरिया, प्रधाना, प्रान्तीय आर्य महिला सभा, श्री रामपाल पंचाल, श्री नितिन्जय चौधरी, अन्य गणमान्य आर्यजन उपस्थित थे।

सरदार गुलशन सिंह जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को भजनों के माध्यम से

- जारी पृष्ठ 4 पर

दीप प्रज्वलित करके रोलेट एक्ट विरोध शताब्दी समारोह का शुभारम्भ करते महाशय धर्मपाल जी। साथ में हैं सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, महापौर श्री आदेश कुमार गुप्ता जी, श्रीमती सुधा गुप्ता जी, स्वामी प्रणवानन्द जी। इस अवसर भजन प्रस्तुत करते सरदार श्री एवं मंचस्थ अतिथियो के साथ उद्बोधन देते आचार्य विरेन्द्र विक्रम जी

स्वामी अग्निवेश आर्यसमाज के नेता नहीं : मतदान व्यक्ति का निजी अधिकार

हाल ही में आर्यसमाज के तथाकथित नेता स्वामी अग्निवेश ने मीडिया में राजनैतिक वक्तव्य जारी करते हुए देशवासियों से कांग्रेस को वोट देने की अपील करते हुए कहा है कि 2019 के लोकसभा चुनावों में आर्यसमाज कांग्रेस का समर्थन करता है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी ने स्वामी अग्निवेश जी के वक्तव्य का खण्डन करते हुए कहा कि अग्निवेश न तो आर्यसमाज के नेता हैं और न ही अधिकारिक प्रवक्ता। यह उनकी निजी राय है।

उन्होंने आगे कहा कि आर्यसमाज विशुद्ध रूप से सांस्कृतिक, सामाजिक एवं धार्मिक संगठन है, जो अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सभी से सहयोग की अपेक्षा रखता है। किसी भी राजनैतिक दल से उसका किसी भी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं है। मुद्दों के आधार पर और व्यक्तित्व के आधार पर हम समस्त देश के आर्यजन अपने पसन्द के उम्मीदवार को मत देने क लिए स्वतन्त्र हैं। आर्य समाज केवल देश में एक मजबूत राष्ट्रवादी एवं भारतीय संस्कृति की रक्षा करने वाले उम्मीदवारों एवं पार्टी का समर्थन करता है। श्री सुरेशचन्द आर्य जी ने देशवासियों का आह्वान करते हुए कहा कि जो पार्टी या प्रतिनिधि देश को मजबूत सरकार दे सकते हो और इसके लिए कृतसंकल्प हों, उन्हीं को अपनी सूझ-बूझ के साथ वोट करें। *- प्रकाश आर्य, मन्त्री*

वेद-स्वाध्याय

अमृत प्राप्ति

त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।। ऋग्वेद 7/59/12
ऋषिः **वसिष्ठः।।** देवता - **रुद्रः ।।** छन्दः **अनुष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **सुगन्धिम्** = सुष्ठु गन्ध व सौन्दर्यवाले और **पुष्टिवर्धनम्** = पुष्टि बढ़ानेवाले **त्र्यम्बकम्** = त्र्यम्बक देव का, संसार के तीनों लोकों के अधिद्रष्टारूप माता का **यजामहे** = हम यजन करते हैं। **बन्धनात् उर्वारुकमिव** = जैसे लता-बन्धन से डाली में पका हुआ कर्कटीफल स्वयमेव जुदा हो जाता है, वैसे [मरते हुए] हम **मृत्योः** = मृत्यु से, मृत्युभय से **मुक्षीय** = मुक्त हो जाएं, **अमृतात्** = अमृत से **मा** = कभी नहीं।

विनय- स्वाभावकि और उचित मृत्यु वह होती है जिसमें शरीर इस प्रकार सहज में छूट जाता है, जैसे पका हुआ फल डाल से टूट पड़ता है। हम चाहते हैं कि हमारी मृत्यु ऐसी ही हो। पूरा पका हुआ फल अपनी अधिक-से-अधिक पुष्टि को, जो उसे उस वृक्ष से मिल सकती है, पा चुका होता है और पकने पर उसमें एक मनोहर सुगन्ध आ जाती है। तब उसको वृक्ष से बलात् पृथक् नहीं करना होता, वह स्वयमेव अनायास छूट जाता है। हम चाहते हैं कि हमारी इस संसार से जुदाई-हमारी मृत्यु-इसी प्रकार अनायास, स्वाभाविक हो। इस प्रयोजन के लिए हे भगवन्! हम तुम्हारा यजन करते हैं। तुम्हारा यजन करने से हम इस संसार-वृक्ष पर स्वाभाविक रूप से पकते जाएंगे। 'सुन्दर गन्धदाता' और 'पुष्टि के बढ़ानेवाले' के रूप में, हे प्रभो! हम तुम्हारी उपासना करते हैं। तुम्हारी उपासना से जहां हम धीरे-धीरे परिपक्व हो जाएंगे, हममें पूरी पुष्टि आ जाएगी, वहां हममें परिपक्वता की सुगन्ध व सुन्दरता भी आ जाएगी। ओह, इस पकी अवस्था में शरीर को छोड़ना, संसार को छोड़ना, भयंकर व दुःखदायी होने की जगह कैसा स्वाभाविक और शान्तिदायक होगा! लोग मृत्यु से यूँ ही डरते हैं। हे मृत्यु के भी स्वामी देव! अज्ञ लोग तुमसे भी डरते हैं, तुम्हारे रुद्ररूप से घबराते हैं, पर हे रुद्र! तुम तो त्र्यंबक हो, तीनों लोकों की आँख हो, तीनों अवस्थाओं के-उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय के-अधिद्रष्टा हो। नहीं, यूँ कहना चाहिए कि तुम तीनों लोकों की तीनों कालों में अम्बा हो, माता हो। तुम उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करनेवाली हमारी माता हो। जो तुम्हारे केवल प्रलय व संहार-रूप को ही देखते हैं वे ही तुमसे, तुम्हारी मृत्यु से घबराते हैं। वे तुम्हारे पुष्टिवर्धक सुन्दर रूप को नहीं देखते, अतएव वे तुम्हारा यजन कर, तुमसे रस पाकर अपनी परिपक्वता नहीं कर पाते। उन्हें जबरदस्ती संसार से छुटने में-मृत्यु में-बड़ा क्लेश होता है। हे अम्बक! तुम तो संहार करती हुई भी हमारी माता हो। तुम जब इहलोकरूपी अपनी दार्यी गोद से (मृत्यु द्वारा) हमें उठाती हो तो हम बच्चे बेशक रोने लगते हैं कि हम गये, हम मरे, पर तब हम नहीं जानते होते कि तुम तुरन्त ही परलोक की अपनी दूसरी गोदी में बैठाने के लिए ही पहली गोद से हमें उठाती हो। हम तुम्हारे नादान बच्चे तुम्हारी अमृतमय गोदों को भी नहीं पहचानते। पर हे मातः! तुम अब हमें ऐसा परिपक्व और सुगन्धियुक्त कर दो कि हम मरते हुए भी तुम्हारी इन अमृतमय गोदों से कभी जुदा न हों। अब मृत्युभय से तो अवश्य हमारा छुटकारा करो, पर अपनी अमृतगोद से हमें कभी बिछुड़ने न दो। हे माँ, अपनी अमृतमय गोद से हमें कभी बिछुड़ने न दो।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

वामपंथ की अन्तिम उम्मीद!

....जो लोग आज इसे सिर्फ राजनितिक नारा समझ रहे है उन्हें यह सब नारे से आगे समझना होगा कि आज आजादी किसका नारा है और लाल सलाम किसका? क्योंकि जिस तरह दलितों को हिन्दू समाज में बाँटने का काम हो रहा है और जावेद अख्तर सरीखे चेहरे बेगुसराय पहुँचकर कन्हैया कुमार के लिए मुस्लिमों के वोट मांग रहे हैं कहीं ये देश पर शुरूआती वैचारिक आक्रमण तो नहीं है?.....

जावेद अख्तर ने भाजपा के उम्मीदवार गिरिराज सिंह को हराने के लिए मुसलमानों से कन्हैया कुमार के एकजुट होकर वोट करने को कहा हैं। देखा जाये तो एक समय हिंदी भाषी राज्यों में अपनी मजबूत पकड़ और संसदीय उपलब्धियां रखने वाले वामपंथी दल और उनकी विचारधारा आज सिमट कर सिर्फ बिहार की बेगुसराय सीट तक सीमित हो चुकी है। अगर बेगूसराय से कन्हैया कुमार किसी कारण जीत जाते है तो वामपंथ की राजनीति को कुछ समय के लिए जीवन मिल सकता है, हालाँकि संभावना कम है। इसी कारण कई पत्रकारों से लेकर तमाम छोटे बड़े वामपंथी नेता और सेकुलरवाद की आड़ में इस्लामवाद परोसने वाले कई अभिनेता आज इस चुनाव में अपने युवा सितारे के कंधे पर सवार होकर अपने अस्तित्व की अंतिम लड़ाई लड़ते हुए बेगूसराय की गलियों में वोट मांगते दिख जायेंगे।

पिछले दिनों जेएनयू छात्र संघ के पूर्व अध्यक्ष कन्हैया कुमार ने देशद्रोह के केस में जेल से जमानत पर रिहा होने के बाद कहा था कि मुझे जेल में दो कटोरे मिले। एक का रंग नीला था और दूसरे का रंग लाल था। मैं उस कटोरे को देखकर बार-बार यह सोच रहा था कि इस देश में कुछ अच्छा होने वाला है कि एक साथ लाल और नीला कटोरा है वह नीला कटोरा मुझे आंबेडकर मूवमेंट लग रहा था और वह लाल कटोरा मुझे वामपंथी मूवमेंट लग रहा था। लेकिन कन्हैया कुमार इसमें वह एक तीसरे कटोरे का जिक्र करना भूल गये जो हरा कटोरा बेगुसराय सीट से चुनाव लड़ रहे वामपंथी दलों के साझा उम्मीदवार कन्हैया कुमार के पक्ष में प्रचार करने पहुंचे जावेद अख्तर के जाने के बाद दिखा।

यह सच है कन्हैया कुमार की बेगुसराय सीट से हार माओवाद, लेनिन और मार्क्सवाद की भारत में अंतिम कब्रगाह साबित होगी। क्योंकि पिछले अनेकों वर्षों से धर्म को अफीम बता-बताकर मार्क्सवाद का धतूरा गरीब जनता को खिलाकर जिस तरह देश माओवादी, नक्सली खड़े कर देश में अनेकों नरसंहार किये हैं। यह हार उनकी इस विचारधारा के ताबूत की अंतिम कील साबित होगी।

देश के कई राज्यों में अनेकों वर्षों तक नक्सलवाद के नाम पर हिंसा मार्क्सवाद के नाम पर सत्ता सुख भोगने वाले वामपंथी नेताओं को आज अपनी विचारधारा के लिए राष्ट्रीय राजनीति ने कोई जगह दिखाई नहीं दे रही है, शायद यही वजह रही होगी कि कन्हैया कुमार ने जेल से निकलने के बाद बिहार तक पहुंचते हुए अपनी राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा का इजहार कर दिया था। कन्हैया कुमार ने आजादी, जय भीम और प्रसिद्ध 'लाल सलाम' के नारे के साथ वामपंथी राजनीति को नए दौर में नए सिरे से गढ़ने की कोशिश की थी।

जो लोग आज इसे सिर्फ राजनैतिक नारा समझ रहे है उन्हें यह सब नारे से आगे समझना होगा कि आज आजादी किसका नारा है और लाल सलाम किसका? क्योंकि जिस तरह दलितों को हिन्दू समाज में बाँटने का काम हो रहा है और जावेद अख्तर सरीखे चेहरे बेगुसराय पहुँचकर कन्हैया कुमार के लिए मुस्लिमों के वोट मांग रहे हैं कहीं ये देश पर शुरूआती वैचारिक आक्रमण तो नहीं है?

आज लोगों को एक बार वामपंथ का इतिहास भी देख लेना चाहिए। इसके बाद उनका निष्कर्ष उन्हें जरुर एक क्रूर सच की तरफ ले जायेगा। बताया जाता है वामपंथ की विचारधारा को लेकर आधुनिक चीन की नींव रखने वाले माओ त्से तुंग यानि माओ की सनक ने 4.5 करोड़ अपने लोगों का रक्त बहाया था। रूस में स्टालिन के 31 साल के शासन में लगभग 2 करोड़ से अधिक लोग मारे गए। यही नहीं बताया जाता है कि इथियोपिया के कम्युनिस्ट वामपंथी तानाशाह से अपने राजनीतिक विरोधियों के खिलाफ लाल सलाम अभियान छेड़ा। 1977 से 1978 के बीच ही उसने करीब 5,00,000 लाख लोगों की हत्या करवाई। एक किस्म से देखा जाये तो अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में स्टालिन से लेकर माओ या फिर अभी तक मार्क्सवाद के नाम पर अपराध और लूट हत्या हिंसा की इन लोगों द्वारा ऐसी भीषण परियोजनाएं चलाईं कि जिनका जिक्र किसी आम इन्सान को शर्मिंदा कर सकता है।

आज वामपंथियों को समझना होगा कि विश्व के लगभग सभी देशों से मार्क्सवाद की विचारधारा का अंत हो चुका है? कहा जाता है सोवियत रूस का पहला वाला अस्तित्व आज नहीं बचा जहाँ मार्क्सवाद का पहला प्रयोग किया था इसी विचारधारा के कारण वह ढह चुका है। पूर्वी यूरोप के कई देश धूल में मिल गए। कुछ तो गायब हो गए जहां वामपंथी शासन व्यवस्था थी। पूर्वी जर्मनी, चेकोस्लोवाकिया जैसे देश नक्शे में नहीं मिलते। हंगरी-पोलैंड से भी यह विचारधारा आई-गई हो चुकी है। एशिया में चीन का मार्क्सवाद अब बाजारवाद से गले मिलता दिख रहा है। भारत में मार्क्सवाद बंगाल और त्रिपुरा नकार चुके हैं और केरल में वामपंथी संघर्ष आज सिमटता दिखाई दे रहा है।

छतीसगढ़ झारखण्ड और बंगाल को तीसरे दिन दहलाने वाले नक्सलवादी एक-एक कर आत्मसमर्पण कर मुख्यधारा के जीवन की ओर लौट रहे हैं। अब जो यह ताजा बिहार का बेगूसराय चुनावी मैदान है, यह वामपंथियों की अवसरवादी राजनीति की सवारी है। किसी तरह संसद में छलांग लगाकर विचारधारा को जीवित करने की चेष्टा है। इसमें मनुवाद को गाली देते हुए मेकअप में सजे कथित बुद्धिजीवियों की कतार है। सैकुलरवाद का ढोंग है। आंबेडकर जी के नाम पर दलितों को सुनहरा सपना बेचने का प्रयास है। जो लोग इसे समाजवाद से जोड़कर देख रहे हैं या भय भूख की आजादी नाम पर भविष्य के सपने संजोये हैं, उन्हें बाद में वही मिलेगा जो 35 साल बंगाल में सत्ता में रहने पर बंगाल के लोगों को मिला है।

- सम्पादक

श्रीलंका में हुए आतंकवादी हमले के सम्बन्ध में समसामयिक लेख

संवेदना का दोगलापन

हाल ही में ईस्टर के मौके पर श्रीलंका के गिरजाघरों और लग्जरी होटलों में हुए विस्फोटों को स्थानीय इस्लामी आतंकवादियों ने अंजाम दिया था। श्रीलंकाई जाँच एजेंसी ये विस्फोट न्यूजीलैंड की मस्जिदों में की गई गोली बारी का बदला बता रही हैं। इन विस्फोटों में मरने वालों की संख्या बढ़कर 300 से ज्यादा हो गई, जिनमें 38 विदेशी शामिल हैं।

इसे बिल्कुल सरल उदाहरण से ऐसे समझें जैसे दिसम्बर 1992 में बाबरी मस्जिद का विवादित ढांचा ढहा दिया गया था, जिसके बाद दाऊद इब्राहिम, टाइगर मेनन, मोहम्मद दोसा और मुस्तफा दोसा ने 'बाबरी मस्जिद ढहाए जाने का बदला लेने के लिए कुछ समय बाद ही 1993 में एक के बाद एक विस्फोट कर मुम्बई को दहला दिया था। जिसमें 257 मासूम लोग मारे गये और 713 अन्य घायल भी हुए थे। बाबरी मस्जिद के विवादित ढांचा गिराए जाने की आलोचना आज तक हो रही है लेकिन मुम्बई हमलों की आलोचना कभी सुनाई नहीं देती जबकि अयोध्या में मात्र कुछ पत्थर गिरे थे और मुंबई में लाशें। यही नहीं जब इन हमलों के हत्यारे को फांसी देने की बात आती है तब अनेकों लोग उसे बचाने भी सामने आते हैं।

ठीक इसी तरह पिछले महीने न्यूजीलैंड के क्राइस्ट चर्च की दो मस्जिदों में हुए हमले का बदला लेते हुए इस्लामवादियों ने एक के बाद एक हमला कर श्रीलंका के गिरजाघरों और लग्जरी होटलों में सैंकड़ो लाशें बिछा दी लेकिन राजनैतिक आलोचना के अलावा कहीं से कोई संवेदना का स्वर दिखाई नहीं दिया।

.....आखिर कब हमारे विचारों में एकता आएगी? कब तक एक पहलू को देखते रहेंगे? क्या श्रीलंका में मरने वाले लोग इन्सान नहीं थे? या न्यूजीलैंड में मरने वाले मुस्लिमों के मुकाबले उन्हें कम दर्द हुआ? आखिर क्यों एक कट्टर विचाधारा को राजनैतिक और वैचारिक संरक्षण प्रदान किया जा रहा है? अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में मुसलमानों पर हुए हमले के विरोध में छात्रों ने कैंडिल मार्च निकाला लेकिन अब इनकी मानवता कहाँ गयी जब श्रीलंका में इससे कई गुना ज्यादा लोग मार दिए गये?.....

जबकि क्राइस्टचर्च हमले के बाद न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री अर्डर्न ने हमले में मारे गए लोगों के परिवारों से मुलाकात की। वे मुस्लिम परिवारों के पास हिजाब में पहुंचीं, उन्हें गले लगाया और मारे गए लोगों को श्रद्धांजलि दी। उनके चेहरे पर मायूसी थी, आंखें नम थी, अनेकों लोग दुनिया के दक्षिणपंथी नेताओं को उनसे करुणा और प्रेम का पाठ सीखने की नसीहत दे रहे हैं।

इसके बाद वहां शुक्रवार की अजान का सीधा प्रसारण किया गया और मृतकों के लिए इस दौरान दो मिनट का मौन रखा गया। प्रधानमंत्री अर्डर्न ने कहा था कि पूरे देश में सरकारी टीवी और रेडियो पर जुम्मे की नमाज पर सीधा प्रसारण किया जाएगा ताकि मुसलमानों को अपने अकेले होने का अहसास न हो सके। उन्होंने कहा था कि हम सब उनके साथ हैं और मुसलमान हमारे हैं।

भारत में भी न्यूजीलैंड में मुसलमानों पर हुए हमले के विरोध में ए.एम.यू. के छात्रों ने कैंडिल मार्च निकाला। बाबे सैयद पर नमाज-ए-जनाजा पढ़कर शोक व्यक्त करते हुए इसे मानवता के खिलाफ बताते हुए कहा कि यह हमला अमेरिका में हुए 9/11 से ज्यादा घातक है। हमला कराने वाले यह न समझें कि हम डरकर बैठने वाले हैं। जबकि देखा जाये तो अमेरिका में हुए 9/11 हमले 3 हजार से ज्यादा लोग मारे गये थे।

पाकिस्तान समेत अनेकों मुस्लिम देशों के तरफ से इसे मानवता को शर्मसार करने वाला बताया किन्तु जब इसके जवाब में ईस्टर के मौके पर श्रीलंका के गिरजाघरों और लग्जरी होटलों को उड़ा दिया गया। एक बार फिर सभी कथित मानवतावादी गायब मिले, न किसी मुस्लिम देश में इसके लिए आंसू बहाए और न ही श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ।

इससे पहले जब फ्रांस की एक पत्रिका चार्ली हेब्दों इस्लाम विरोधी कंटेंट छाप देती है तब उसकी आलोचना सभी जगह सुनाई देती है। लेकिन जब आंतकी मैगजीन में छपे कंटेंट का बदला लेते हुए पत्रिका से जुड़ें 9 पत्रकार और 2 सुरक्षा कर्मियों की हत्या कर घटनास्थल पर नारे लगाते हैं कि हमने पैगम्बर का बदला ले लिया, तब भी पत्रकारों के प्रति संवेदना गायब दिखती है।

आखिर कब हमारे विचारों में एकता आएगी? कब तक एक पहलू को देखते रहेंगे? क्या श्रीलंका में मरने वाले लोग इन्सान नहीं थे? या न्यूजीलैंड में मरने वाले मुस्लिमों के मुकाबले उन्हें कम दर्द हुआ? आखिर क्यों एक कट्टर विचारधारा को राजनैतिक और वैचारिक संरक्षण प्रदान किया जा रहा है? अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में मुसलमानों पर हुए हमले के विरोध में छात्रों ने कैंडिल मार्च निकाला लेकिन अब इनकी मानवता कहाँ गयी जब श्रीलंका में इससे कई गुना ज्यादा लोग मार दिए गये?

हर एक हमले और इस्लामवाद के बदले के नाम पर हत्याओं से शिक्षा लेने की प्रक्रिया का आरम्भ पिछले सैकड़ों वर्षों से जारी है। लोकतंत्र में जीवन व्यतीत करने वाले हमारे जैसे लोग इस्लामवाद के बारे में तब जान पाते हैं जब सडकों पर रक्त बहता है, घरों से चीखें निकलती हैं। लेकिन एक बड़े धड़े के हलक से इसके बावजूद भी संवेदना के दो शब्द नहीं निकल रहे हैं। इसका कारण कौन बतायेगा और जवाब कौन देगा?

मुंबई बम विस्फोट, ताज हमला, अमेरिका में वर्ल्ड ट्रेड सैंटर से लेकर बाली, मैड्रिड, बेसलान लंदन ऐसी घटनायें हुईं जिन्होंने समूचे विश्व को हिला दिया। लेकिन कभी भी संवेदना की वह लहर दिखाई नहीं दी जो न्यूजीलैंड हमले के बाद देखने को मिली? यही नहीं बड़ी सावधानी से हर बार घटनाओं को मरोड़ दिया जाता है। जब क्राइस्टचर्च की दो मस्जिदों पर हमला होता है उसे इस्लाम पर हमले से जोड़ दिया जाता है। लेकिन जब हमला श्रीलंका के चर्च या अफगानिस्तान में बुद्ध की प्रतिमा या मुम्बई में विस्फोट होते हैं तब इसे आतंकवादियों से जोड़ दिया जाता है।

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री ने इसे इस्लाम्फोबिया बताया लेकिन जिहाद की घटनाओं के रोग को रोकने के लिये भी कोई भी विशेष बयान उनका नहीं आया। इससे क्या यह प्रकट नहीं होता है कि इस्लाम के नाम पर जिहाद, हमले कर हत्या को मौन समर्थन प्राप्त है? यदि ऐसा है तो पूरे विश्व में अन्य मतों लोगों का इस्लाम के प्रति विचार कठोर होता चला जायेगा और आने वाले समय में इस्लामवाद के विरुद्ध यह अधिक शत्रुवत होता जायेगा। जिस तरह पश्चिम से लेकर एशिया में चीन और बर्मा अब श्रीलंका में बुर्के पर प्रतिबंध लगने जा रहा है यानि आज इस्लामवाद के मुकाबले इस्लामाबाद का विरोध कहीं अधिक दिख रहा है?

- राजीव चौधरी

प्रेरक प्रसंग

हम वीर हैं, डरना क्या जानें?

देश की इस समय की सबसे बड़ी माँग यह है कि देश को वीर विप्र चाहिएँ। इस माँग को कौन पूरा करेगा? आर्यसमाज को ही यह कार्य करना है। राष्ट्रद्रोही क्रूर हत्यारे बैंक लूट लें, लुक-छुपकर स्टेनगनों से लोगों की हत्या कर दें, बम-फैक्टरियाँ बना लें, तो इनमें से किसी को फाँसी नहीं दी जाती। सद्भावना व एकता के नाम पर ऐसे लोगों को छोड़ दिया जाता है। इस प्रकार देश क्या बचेगा? आवश्यकता है देश को श्रद्धानन्द, लाजपत, सुभाष, सावरकर, स्वतन्त्रानन्द, नरेन्द्र (सोमानन्द) जैसे प्रणवीरों की। संकटों के सामने छाती तानकर हुँकारनेवाले और घातकों को ललकारने वाले इन तेजस्वी पुरुषों का स्मरण करके आर्यजाति कायरों की 'अहिंसा' से मुक्ति पाए।

हैदराबाद सत्याग्रह के दिनों की बात है, पूज्यश्री महात्मा नारायण स्वामीजी महाराज रेल में यात्रा कर रहे थे। श्री महाराज एक पैसेंजर गाड़ी से पूना जा रहे थे। आप थर्ड क्लास के डिब्बे में बिस्तरा बिछाकर लेट गये। अभी गाड़ी शोलापुर से नहीं चली थी। जो आर्यजन विदा करने आये थे, वहीं खड़े थे कि एक व्यक्ति महाराज के पास आया और कहा कि जिस डिब्बे में वह है, उसमें और कोई नहीं, इसलिए आप वहाँ चलकर लेटें। महात्माजी सतर्क थे ही। एक आर्य को भेजा, जाओ उसका डिब्बा देखकर आओ, क्या इससे अच्छा है और वहाँ और कोई भी है? उसने लौटकर बताया कि छोटा-सा डिब्बा है। वहाँ चार, पाँच हैदराबादी मुसलमान हैं। उन्हीं के सिखाने पर वह पाजी महात्माजी को उस डिब्बे में लिवाने के लिए आया था। ऐसी घटनाएँ तब घटती रहती थीं, परन्तु हमारे नेता व आर्यजन शीश हथेली पर धरकर आगे बढ़े। शत्रु भी हाथ डालते हुए सोचता था। ऋषि दयानन्दजी से लेकर कृष्णराव ईटेकर व उनकी पत्नी माता गोदावरी देवी तक न जाने कितने आर्यों ने वीरगति पाई। फिर भी देश, जाति के शत्रु आर्यसमाज से भयभीत थे। आर्यसमाज आतंकित न हुआ।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

चीन सरकार के नए कानून पर विशेष लेख

धर्मनिरपेक्षता या षडयन्त्र ?

हाल ही में योगेन्द्र यादव ने इंडिया टुडे टीवी पर भाजपा प्रवक्ता अमित मालवीय के साथ साध्वी प्रज्ञा सिंह की उम्मीदवारी पर एक बहस में अपनी पारिवारिक कहानी साझा की। योगेन्द्र यादव ने अपने दादा की हत्या एक दुखद किस्सा बताते हुए कहा कि उनके दादा की हत्या उनके पिता की उपस्थिति में एक मुस्लिम भीड़ ने कर दी थी। इसके बाद उनके पिताजी ने बच्चों को मुस्लिम नाम दिए यानि बच्चों के अरबी भाषा में रखे। वह योगेन्द्र को सलीम और योगेन्द्र यादव की बहन नीलम को 'नजमा' कहकर पुकारते थे।

योगेन्द्र यादव देश के एक समाज शास्त्री और चुनाव विश्लेषक के साथ आम आदमी पार्टी के संस्थापक सदस्यों में एक रहे है और आम आदमी पार्टी से निकाले जाने के बाद योगेन्द्र यादव और जाने-माने वकील प्रशांत भूषण ने नई पार्टी 'स्वराज इंडिया पार्टी' इंडिया बनाई थी। देखा जाये तो योगेन्द्र यादव जो अपनी धर्मनिरपेक्षता का किस्सा सुना रहे थे वह कोई वोट की राजनीति का हिस्सा नहीं बल्कि आधुनिक धर्मनिरपेक्षता की एक बीमारी है।

कहा जा रहा है कि योगेन्द्र यादव जी ने इस किस्से को देश की धर्मनिरपेक्षता से जोड़ते हुए भाजपा प्रवक्ता अमित मालवीय जी पर साम्प्रदायिकता का आरोप जड़ते हुए उन्हें चुप करा दिया। एक कहावत है अगर मुझे डर लग रहा है तो मैं चौकन्ना और पडोसी को डर लगे तो वह डरपोक। असल में योगेन्द्र यादव जी अपनी जिस पारिवारिक धर्मनिरपेक्षता का किस्सा सुना रहे थे उसमें मुझे कहीं भी धर्मनिरपेक्षता दिखाई नहीं दी। हाँ, मन में सवाल जरुर खड़े हो रहे हैं कि आखिर योगेन्द्र यादव जी असल कहना क्या चाह रहे थे ?

यही कि उस मुस्लिम भीड़ द्वारा उनके दादा की हत्या करना कोई गुनाह नहीं बल्कि एक बहुत बड़ा महान और पुण्य कार्य था। इस हत्या से उनके पिताजी इतने प्रेरित और आत्मप्रसन्न हुए कि उन्होंने सोचा क्यों न बच्चों को भी ऐसा ही बनाया जाये और उनके नाम मुस्लिम शब्द कोष से उठाकर रख दिए थे।

क्योंकि दुनिया में अगर नाम बच्चों के नाम रखने के लिहाज से देखें तो अक्सर लोग अपने बच्चों के नाम प्रेरणा लेकर रखते है और वही नाम रखना पसंद करते हैं जिसका कुछ अर्थ हमारे धर्म संस्कृति, सभ्यता, वीरता से जुड़ा हो या फिर वह जो विशाल व्यक्तिव्य, महान आत्मा या महापुरुष रहे हों। जैसे आज महाराणा प्रताप, सरदार भगतसिंह जी के नाम पर बहुत सारे नाम मिल जायेंगे। या फिर कुछ लोगों के नाम के आगे राम होता तो कुछ नाम में राम शब्द बाद में आता है। ऐसा ही श्रीकृष्ण जी के नाम में देख सकते हैं।

दूसरा सवाल जब योगेन्द्र यादव जी का नाम सलीम और उनकी बहन यानि नीलम जी का नाम नजमा रख ही दिया था फिर योगेन्द्र यादव वो कारण भी बताते जिसके बाद फिर उनका नाम सलीम से योगेन्द्र हुआ और नजमा का नीलम ? क्या योगेन्द्र यादव जी बता सकते है कि मार्च 2016 में दिल्ली के विकासपुरी में एक

- शेष पृष्ठ 8 पर

.....अगर नाम बच्चों के नाम रखने के लिहाज से देखें तो अक्सर लोग अपने बच्चों के नाम प्रेरणा लेकर रखते है और वही नाम रखना पसंद करते हैं जिसका कुछ अर्थ हमारे धर्म संस्कृति, सभ्यता, वीरता से जुड़ा हो या फिर वह जो विशाल व्यक्तिव्य, महान आत्मा या महापुरुष रहे हों। जैसे आज महाराणा प्रताप, सरदार भगतसिंह जी के नाम पर बहुत सारे नाम मिल जायेंगे। या फिर कुछ लोगों के नाम के आगे राम होता तो कुछ नाम में राम शब्द बाद में आता है। .....

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्यसमाज के नेता अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा रोलेट एक्ट के विरोध का .....

श्रद्धा सुमन भेंट किए। रोलेट एक्ट विरोध शताब्दी समारोह का शुभारम्भ पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी के साथ सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, महापौर श्री आदेश कुमार गुप्ता जी, श्रीमती सुधा गुप्ता जी, स्वामी प्रणवानन्द जी ने दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया।

स्वामी प्रवणानन्द जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धांजलि देते हुए अपने आशीष वचनों से सभी का धन्यवाद किया कि आप सबने स्वामी श्रद्धानन्द जी को, उनके देश व संस्कृति की रक्षार्थ किए महान, त्याग व निस्वार्थ कार्यों को याद किया।

आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी ने इस ऐतिहासिक धटना का विस्तारपूर्वक विवेचन कर सभी के रोंगटे खड़े कर दिए। होशंगाबाद से पधारे आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के महान शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द जी शत् शत् नमन करते हुए, उनकी जीवनशैली पर प्रकाश डाला तथा प्रेरित किया कि हम भी उनका अनुकरण करें।

उत्तरी दिल्ली के महापौर श्री आदेश कुमार गुप्ता जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी का स्मरण करते हुए दिल्ली नगर निगम की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा कि स्वामी जी के कार्यों का स्मरण अकस्मात ही टाउन हॉल में लगी उनकी प्रतिमा से हो आता है। हम सबको उनसे प्रेरणा अवश्य ही लेनी चाहिए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धाजलि देते हुए, उनके द्वारा किए विशेष महत्वपूर्ण कार्यों का प्रचार करने का संकल्प लेते हुए इस एक वर्ष मे भव्य आयोजन का आह्वान भी किया।

श्रीमती बाला चौधरी जी, अध्यक्षा, आर्य विद्या मन्दिर, सहसंचालिका, आर्य अनाथालय, पटौदी हाउस, दिल्ली ने सभी महापुरुषों को समरण करते हुए कहा कि आर्य अनाथालय की स्थापना स्वामी श्रद्धानन्द जी ने की थी, मैं उनको भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करती हूं।

पद्मभूषण आर्य रत्न महाशय धर्मपाल जी ने श्रद्धा सुमन भेंट करते हुए अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के अधूरे कार्यों को पूरा करने का संकल्प लिया।

दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को समस्त दिल्ली के आर्यजनों की ओर से श्रद्धांजलि देते हुए सभी को जानकारी दी कि जैसे ही टाउन हॉल के सामने हो रहे निमार्ण व सौन्दर्यकरण की कार्य योजना का काम पूरा होगा तो 'स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धांजलि व उनके द्वारा राष्ट्र व संस्कृति की रक्षा हेतु किए महान कार्यों को स्मरणार्थ एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा।इस आयोजन को सफल बनाने में सर्व श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता, ओमप्रकाश आर्य, सुरेन्द्र आर्य, नितिञ्जय चौधरी, सुरिन्दर चौधरी, एस. पी. सिंह तथा महाशय धर्मपाल आर्य मिडिया सैन्टर के सहयोगियों का विशेष योगदान रहा, सभी का धन्यवाद।

- सतीश चड्डा, संयोजक

उद्बोधन देते सर्वश्री धर्मपाल आर्य, स्वामी प्रणवानन्द, महाशय धर्मपाल, आदेश गुप्ता, आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक, विनय आर्य जी एवं अध्यक्षा श्रीमती श्रीबाला चौधरी।

रोलेट एक्ट विरोध शताब्दी समारोह के अवसर पर आर्यसमाज कीर्ति नगर के आर्यवीरों की प्रस्तुति एवं 30 मार्च, 1919 की घटना को प्रदर्शित करते टाउनहॉल पर सरकार की ओर से लगाए गए शिलालेख।

आर्य समाज सैक्टर 3, 4, 5, 6 एवं विजय विहार, रोहिणी दिल्ली के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन सम्पन्न

आर्य समाज सैक्टर 3, 4, 5, 6 एवं विजय विहार, रोहिणी, दिल्ली 110085 के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन 21 अप्रैल, 2019 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी महामन्त्री श्री विनय आर्य जी की गरिमामयी उपस्थिति में पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी के कर-कमलों द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ सांय 3:30 बजे आचार्य देवकृष्ण दास जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ से हुआ। इस अवसर पर आचार्या अमृता आर्या जी के भजन हुए।

महाशय धर्मपाल जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत के प्रत्येक उस राज्य में आर्यसमाज के भवन का निर्माण किया जाना चाहिए, जहां आर्य समाज के लिए भवन नही है।

श्री विनय आर्य जी ने आर्य परिवार के प्रतिभावान बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु सभा द्वारा चलाई गई योजनाओं से उपस्थित आर्यजनों को अवगत कराया और सभी को इन योजनाओं से लाभ लेने के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा के महामंत्री श्री सतीश चड्डा, मंत्री श्री हरिओम बंसल, लेखा निरीक्षक श्री अरुण आर्य, दिल्ली सभा के उप प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य, श्री शिव कुमार मदान, श्री अरुण प्रकाश वर्मा, मंत्री श्री सुखबीर सिंह आर्य, श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता, श्री सुरेन्द्र आर्य, श्री वीरेन्द्र सरदाना, विशिष्ट सम्मानित सदस्य श्री बलदेव सचदेवा, श्री विनय खुराना, श्री नीरज आर्य, वर्ग प्रतिनिधि श्री नरेन्द्र नारंग, आर्यसमाज रोहिणी सै.7 के प्रधान श्री नरेश पाल आर्य, मंत्री श्री संजीव आर्य एवं अनेकों आर्यजनों ने कार्यक्रम में शामिल होकर शोभा बढ़ाई।

इस अवसर पर भवन निर्माण में सहयोग करने के लिए महाशय धर्मपाल चैरीटेबल ट्रस्ट, आर्य समाज विशाखा एन्कलेव, आर्य समाज सै. 7 रोहिणी, आर्य समाज कीर्ति नगर, आर्य समाज पंचदीप, आर्य समाज सरस्वती विहार, आर्य समाज संदेश विहार, आर्य समाज सै.11 द्वारका, आर्यसमाज सै.15 रोहिणी, श्री वीरेन्द्र आर्य एवं श्रीमती चन्द्रकान्ता अरोड़ा को आभार पत्र देकर सम्मानित किया गया।

उद्घाटन समारोह की पूर्व संध्या पर 20 अप्रैल 2019 को महर्षि दयानन्द सरस्वती पार्क पाकेट सी 9 सैक्टर 5 आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें वैदिक विदुषी आयुषि राणा के प्रवचन एवं आचार्य अमृता आर्या, श्रीमती मधु बेदी एवं श्रीमती संगीता आर्या के सुमधुर भजन हुए। आर्य समाज के प्रधान श्री सुदेश डोगरा जी ने अध्यक्षीय भाषण में सभी आगुन्तकों का धन्यवाद करने के साथ-2 आर्यसमाज के सभी कार्यकर्ताओं का भी धन्यवाद किया।

- सुरिन्द्र चौधरी, मन्त्री

आर्यसमाज के नए भवन का उद्घाटन करते पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी साथ में सभा महमन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं श्री सुरिन्द्र चौधरी जी। इस अवसर पर सहयोगी आर्यसमाजों एवं आर्यजनों को आभार पत्र भेंट किए गए।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत 'सहयोग' द्वारा वस्त्रों का वितरण

सार्वदेशिक सभा की सेवा ईकाई 'अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ' के अन्तर्गत संचालित ''सहयोग'' वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति व शिक्षा के मूलभूत अधिकार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है। सहयोग की ओर से इस अप्रैल मास में दिल्ली के विभिन्न 8 क्षेत्रों में गरीब एवं निराश्रित बच्चों एवं परिवारों को उनके योग्य वस्त्रों का वितरण किया गया जिनमें रानी बाग, रेलवे रोड शकूर बस्ती, आर्यसमाज सन्देश विहार, आर्यसमाज जहांगीर पुरी, केशव पुरम, आनन्द विहार, एवं किशन गंज के झुग्गी झोपड़ी क्षेत्र सम्मिलित थे।

इस महत्वाकांक्षी योजना के महत्त लक्ष्य की पूर्ति हेतु आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। आर्यसमाज के सदस्य व स्थानीय निवासी अपने परिवार के किसी भी सदस्य के वह वस्त्र जो उपयोगी हैं किन्तु किसी कारण से अब आपके उपयोग में नहीं आ रहे हैं तथा वह पुस्तकें जो पाठ्यक्रम में हैं पाठ्यक्रम (Course) पूरा कर लेने के पश्चात् अब अन्य किसी जरूरतमंद छात्र की शिक्षा में सहयोगी हो सकती हैं, को हमें प्रदान कर सकते हैं। आप द्वारा प्रदान किए गए वस्त्र, खिलौने, पुस्तकें आदि सामान ''सहयोग'' के माध्यम से जरूरतमंद व्यक्ति तक पहुंचाया जा सकेगा। ''**सहयोग**'' के विषय में किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त करने के लिए मोबाइल नं. **9540050322** पर संपर्क कर सकतें हैं।

आर्यसमाज राउरकेला, सैक्टर-19 (उड़ीसा) का 55वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज राउरकेला, सैक्टर-19 (उड़ीसा) का 55वां वार्षिकोत्सव समारोह 31 मार्च एवं 1 अप्रैल, 2019 को आयोजित किया गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी विशेष रूप से पहुंचे। महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने समारोह में लगभग 250 श्रद्धालुओं ने भाग लिया। इस अवसर पर पर आचार्य डॉ. सुदर्शन देव (संस्थापक हरिपुर गुरुकुल) एवं आचार्य मनुदेव (गुरुकुल आमसेना) ने भी आर्यजनों को सम्बोधित किया। महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने आर्यसमाज के अधिकारियों को सम्मेलन में सहयोग के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से स्मृति चिह्न भेंट करके सम्मानित किया गया।

Why every NUN should only be Unmarried?

Be there be any religion, caste or creed, if there is any flaw then it is always fatal to civil society. Actually, this was the February month of the year 2014 and the Supreme Court of India giving instructions to the Chief Secretary of Karnataka Government that all necessary steps should be taken to prevent the women from becoming 'Devadasi' forcibly in a temple in Devnagar district of the state.

Not only this, in the petition filed in the Supreme Court Devdasi tradition was said to be a subject of national shame. At that time, many intellectuals appeared on the ground and questioned the religion as if they are digging the paper with their pen and then put the miscreants in the Hindu religion in front of all.

Possibly, people living in northern India may not know about this devadasi system but to the people living in southern India, the devadasi concept is not new. In fact, in the 6th century, In South Indian temples, this tradition was started to marry the virgin girls to the Gods of the temple. After this, she had to dedicate her whole life to that God. Although it was not a part of a Sanatan Vedic religion, neither did we found mention of this practice in the Vedas and or in Upanishads.

For this reason, in the Renaissance period of the 19th century, Hindus society itself questioned this tradition which was later brought to the category of crime by law. If this practice is still alive somewhere in the corners of the country then its main reason is the self-acceptance of women engaged in this work themselves.

Indeed, this was the result of the effect of the awakened consciousness of the Hindu society that in the name of religion or in the name of antiquity, we cannot carry forward these misleading practices.

But in another form, this practice continues to exist in Christian society so far. In Christian society, women also devote their whole life in the name of religion and remain unmarried throughout their lives. Such women are called "nun".

During the oath ceremony of the making of nun they have to wear a wedding dress at a formal ceremony, and they have to marry to- "Jesus Christ". But against this practice, no social organization so far has raised the courage to file a petition, and no direction has been issued by the High Court.

Perhaps because the matter is connected to the Vatican and no one can dare to speak against the authoritarianism of Vatican bishops Church. While many nuns are annoyed with the system of churches, they are questioning why a married Christian woman can not become a nun?

Actually friends, speaking on her suffocation, the autobiography of a nun whose name is- Sister Jasmine, came to the market. The name of this book was "Amin- A Nun's Autobiography", the story of his own life experiences. This is a frightening experience. In real, reading this 'so' horrifying experience will make you feel furious with the priests. Fully devoted to his fictional husband, Jesus, when a seventeen-year-old sister Jasmine, who had entered the convent at the age of seventeen, and saw the evils of his church with open eyes, she would have to take the audacious decision of breaking out of the convent.

She came in front of the media and spoke openly about the flaws of the church, and presented the examples of the lust of the priests who are considered to be sacred to be dressed in white clothes. Then she wrote openly about the homosexual conduct of Nunes. This decision of her decision was not the result of sudden impulse but while remaining in this for a long time and kept bearing on this exploitation, which she later brought on paper.

Not only Jasmine, who was not only exposed to the untimely bitter truth behind these strong steel curtains of the religious and fairness of the Christian society but also- Mary Chandy, a former Kerala nun, by autobiography, described the sexual autonomy of priests in Catholic churches and exposed the truth. In his autobiography 'Nunma Niranjewe Swasti', Sister Mary Chandy wrote that due to her opposition to a rape attempt by clergy, she had to leave the church 12 years ago. In her autobiography, Sister Mary, who tried to highlight 'darkness' in the church and its educational centers, also wrote that the life within the church was full of lust, rather than spirituality.

I eloped at 13 years of age to become 'nun' and in return, I got only- exploitation and loneliness. She further wrote, 'I thought that both the priest and the nun have been engaged in the fulfilment of their physical needs by deviating from their resolve to serve humanity. Upset with these experiences, I left the church and the convent".

Once Jasmine and Mary Chandi were immersed in full faith in Jesus, accepting him as her husband on becoming nuns as lifelong unmarried, but she did not even dream that she would be exploited and will have to divorce her god one day.

These nuns remained the victim of homosexual exploitation for a long time. They were sexually exploited by the corrupt priests. After which these Nuns thought of whistleblowing to expose the inside story running in name of

purity, and religion.

It is said that the struggle of faith is old in this institution. Jasmine's struggle is similar. Even after the disclosure of one nun after the other, such mischievous practices are being still carried out in the name of purity.

Now the biggest question is- Why a nun cannot be married? When will these Christian organization, who always shouts at the world's welfare and the well-being of the humanity would agree that a woman is also a human being and her marriage should be done only to the human beings rather than a statue or an idol. Everyone believes that religion is not a bad thing in its basic sense but the opposition starts there where one starts exploiting the other by doing the misinterpretation of religion. In the end, the question is that why the writers who wrote against the religious hypocrisy, the evils of religion, and the ostensibly are always silent on such matters?

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

पृष्ठ 4 का शेष

डेंटिस्ट डॉक्टर पंकज नारंग की कुछ मुस्लिम लोगों द्वारा पीट-पीटकर हत्या कर दी थी, क्या एक बेकसूर, बेवजह जान गंवा देने वाले डॉक्टर की पत्नी भी अपने बच्चों के नाम मुस्लिम रख लें?

असल में धर्मनिरपेक्षता कोई बुरी चीज नहीं है इसका अर्थ होता है मैं अपने धर्म में विश्वास के साथ अन्य सभी धर्म, मजहब, पंथ को सम्मान देता हूँ। पर मेरी अपनी आस्था अपने महापुरुषों अपने धर्म में अडिग है। किन्तु भारत में वामपंथियों के द्वारा इसकी परिभाषा को बदल दिया गया और नई परिभाषा यह खड़ी कर दी कि अपने धर्म को अपशब्द और दूसरे को सही कहना ही जैसे सच्ची धर्मनिरपेक्षता हो? यह सिर्फ वोट की राजनीति का हिस्सा नहीं बल्कि आधुनिक धर्मनिरपेक्षता की एक बीमारी है आज आपको योगेन्द्र यादव जैसे अनेकों पत्रकार, नेता और अभिनेता धर्मनिरपेक्षता की इस बीमारी से ग्रसित दिखाई देंगे।

दरअसल वामपंथियों की पूंजीवाद में संकट की प्रतीक्षा बेकार गयी, पतन का कम्युनिष्ट आन्दोलन झुककर मौलवियों के खेमे में चला गया। क्योंकि इस्लाम में एक बड़ा वर्ग मौलिक सुविधाओं से दूर, गरीबी, भूख की जिन्दगी बसर कर रहा था। जिन लोगों को वामपंथी कभी समाजवाद के लिए इक्कठा नहीं कर पाए उन लोगों को मौलवी द्वारा इस्लामवाद के नाम पर खड़ा कर लिया गया।

इसी का नतीजा है कि प्रसिद्ध वामपंथी और सीपीआई नेता कविता कृष्णन ने कश्मीर में पत्थरबाजों को क्लीन चिट देते हुए कहा था कि कश्मीर में अलगाव वादी और आतंकी पाकिस्तान पैदा नहीं करता बल्कि भारतीय सेना पैदा करती है। यही नहीं इससे कई कदम आगे बढ़ते हुए अरुंधती राय ने तो यहाँ तक कहा था कि कश्मीर में भारतीय सेना का आक्रमण शर्मनाक है। इस तरह के बयान यही दर्शाते है कि वामपंथी विचारधारा विश्व के सभी कोनों में धर्मनिरपेक्षता की आड़ में इस्लामवाद को प्रोत्साहित कर रही है। हिंसात्मक विचारों और कार्यों को संवेदना, मासूमियत और धर्मनिरपेक्षता का आवरण दे रही है जिससे यह गठबंधन अपनी उर्जा लेकर पल्लवित व पोषित हो रहा है।

ऐसे में आम आदमी पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य रहे हैं राजनीतिक विश्लेषक कहे जाने वाले व स्वराज इंडिया पार्टी के संस्थापक योगेन्द्र यादव की दुखद कहानी भले ही वामपंथियों के लिए संवेदना और मीडिया के लिए खबर हो पर योगेन्द्र यादव जी को इन सवालों के जवाब जरुर देने चाहिए कि आखिर उस भीड़ ने ऐसा कौन-सा महान कार्य किया था जिससे उनके पिताजी ने प्रसन्न होकर बच्चों के नाम मुस्लिम रख दिए थे?

सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर

दिनांक : 2 जून से 16 जून 2019

स्थान : गुरुकुल शिविालिक अलियासपुर अम्बाला (हरियाणा)

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के अध्यक्ष डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती जी की अध्यक्षता में शाखानायक, उप व्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी का शारीरिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण हेतु राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। **प्रवेश शुल्क : शाखानायक : 500/-रुपये, उप व्यायाम शिक्षक एवं व्यायाम शिक्षक के लिए 600/- रुपये है** (पाठ्य पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।) विस्तृत जानकारी के लिए संयोजक श्री रविन्द्र सिंह 9991700034 से सम्पर्क करें।

- सत्यवीर आर्य, प्रधान संचालक, 9414789461

आर्यसमाज पुष्पांजलि एन्कलेव का

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

26 से 28 अप्रैल 2019 के बीच आचार्य नरेंद्र मैत्रेय जी के नेतृत्व में एवं आचार्या अमृता जी के मधुर भजनों के साथ आर्यसमाज मंदिर पुष्पांजलि एंकलेव का वार्षिक उत्सव धूमधाम से मनाया। ऋग्वेद शतकम् यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर 28 अप्रैल 2019 को विशेष रूप से ध्वजारोहण समाजसेवी श्री संजय अग्रवाल द्वारा किया गया तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री विनय आर्य जी महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं श्री सुरेन्द्र आर्य जी प्रधान वेद प्रचार मंडल उ. पश्चिमी दिल्ली उपस्थित रहे।- ***मन्त्री***

आर्ष गुरुकुल आबू पर्वत (राज.) का

28वां वार्षिकोत्सव

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबू पर्वत, सिरोही (राज.) का त्रि-दिवसीय वार्षिकोत्सव 25, 26, 27 मई 2019 को मनाया जा रहा है। इस अवसर पर यज्ञ, भजन, वेदोपदेश तथा ब्रह्मचारियों द्वारा शास्त्रार्थ, व्याख्यान, व्यायामादि के प्रदर्शन इत्यादि अनेक कार्यक्रम आयोजित होंगे।

- स्वामी धर्मानन्द, संचालक

नर्व वर्ष एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाया

आर्य समाज, महर्षि दयानंद मार्ग, बीकानेर राजस्थान में नव सवंत्सर व आर्य समाज का 145वां स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर श्री डी.एन. पुरोहित, पूर्व कुलपति महर्षि दयानंद वि.वि., डॉ. सतीश कच्छावा, पूर्व प्रोफेसर रेडियोलोजी मैडिकल कॉलेज एवं डॉ. राधेश्याम आर्य, प्रो. पशु पोषाहार विभाग सहित अनेक गणमान्य महानुभावों ने भाग लिया। आर्य समाज के प्रधान महेशचंद्र सोनी, मंत्री श्री भगवती प्रसाद सोनी एवं कोषाध्यक्ष श्रीमती रूपादेवी आर्या जी आदि का विशेष योगदान रहा। - ***मन्त्री***

आर्य समाज सरिता विहार दिल्ली का

26वां वार्षिक उत्सव सम्पन्न

18 से 21 अप्रैल 2019 के बीच आर्यसमाज सरिता विहार के द्वारा श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी के प्रवचन एवं श्री कल्याण वेदी जी के मधुर भजनों के साथ प्रेरक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। प्रेम सौहार्द के वातावरण में 4 दिवसीय उत्सव सम्पन्न हुआ। - ***मन्त्री***

आर्यसमाज खलासी लाईन सहारनपुर का

65वां वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज खलासी लाइन, सरदार पटेल मार्ग सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) का तीन दिवसीय वार्षिक उत्सव 19 से 21 अप्रैल 2019 के बीच मनाया गया। आचार्य श्री संजय याज्ञिक प्रचारक मेरठ, श्री कुवंर उदयवीर आर्य, भजनोपदेशक मथुरा, आचार्य श्रीमती सुलभा शास्त्री जी हापुड़ के द्वारा प्रवचन एवं भजन प्रस्तुत किए गए। - ***मन्त्री***

आर्य वधू चाहिए

दिल्ली के प्रतिष्ठित आर्य परिवार के लड़के जन्म 13 जुलाई 1989, शिक्षा बी.एड., कद 5'8'', रंग गोरा, इकहरा बदन, वजन 68 किलो, गोत्र धूतकश्यप, दक्षिण दिल्ली में अपना घर, वेतन 3 से 4 लाख वार्षिक, के लिए आर्य परिवार की कन्या चाहिए जिसका परिवार व स्वयं वैदिक सिद्धान्तों को मानने वाली और संध्या-हवन स्वतंत्र रूप से करना जानती हो, दिल्ली एन.सी.आर. निवासी को वरीयता।***सम्पर्कसूत्र- 9540040324***

आवश्यकता है

एक पुरोहित की जो आर्य समाज मंदिर में रहकर संध्या-हवन, सत्संग व वेद प्रचार का कार्य कर सके। इच्छुक महानुभाव अपना विस्तृत बायोडाटा आवेदन पत्र के साथ aryasabha@yahoo.com पर भेजें। अधिक जानकारी के लिए मो. 9540040324 से सम्पर्क करें।- ***महामन्त्री***

अध्यापकों की आवश्यकता

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबूपर्वत, जिला- सिरोही (राजस्थान) में संस्कृत-साहित्य, हिन्दी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, गणित आदि विषयों के अध्यापन हेतु अध्यापकों की आवश्यकता है। कृपया सेवानिवृत्त अध्यापक महानुभाव ही सम्पर्क करें। आवास, भोजन, गोदुग्ध की नि:शुल्क व्यवस्था के साथ-साथ समुचित मानदेय भी दिया जाएगा। इच्छुक महानुभाव गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर 25-26-27 मई, 2018 को गुरुकुल पधारें।

सम्पर्क सूत्र:- **8764218881, 9414589510, 8005940943**

सार्वदेशिक आर्यवीरांगना दल के तत्त्वावधान में

राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आरत्मरक्षण शिविर

31 मई से 9 जून,19 : महर्षि दयानन्द निर्वाण स्थली, अजमेर (राजस्थान)

शिविरार्थी की आयु कम से कम 14 वर्ष हो। ★शिविरार्थी को शिविर स्थल पर 30 मई दोपहर 1 बजे तक अवश्य पहुंचना होगा। ★ सभी शिविरार्थी अपना नामांकन 31 मई दोपहर 1 बजे तक अवश्य करा लें। शिविर में शिक्षिका, सह शिक्षिका, नायिका की भी इस बार अलग कक्षाएं लगाई जाएंगी। परीक्षा में उत्तीर्ण आर्य वीरांगनाओं को प्रमाण पत्र दिए जाएंगे।- ***साध्वी डॉ. उत्तमायति, प्रधान संचालिका, 9672286863***

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में

विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

दिनांक : 19 मई से 26 मई 2019, आर्य कन्या गुरुकुल, नरेला, दिल्ली

शिविरार्थी की आयु 11 वर्ष से अधिक हो। ★ शिविरार्थी को शिविर स्थल पर 19 मई को प्रात: 11 बजे तक अवश्य पहुंचना होगा। शिविर शुल्क 400/- रुपये है। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें- **श्रीमती शारदा आर्या, संचालिका, 9971447372**

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में

38वां वैचारिक क्रान्ति शिविर

16 मई से 26 मई, 2019

स्थान : आर्यसमाज रानी बाग, मेन बाजार, दिल्ली-110034

आर्यजन दोनों कार्यक्रमों में अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर देश के विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों से पधारे कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें।

निवेदक **महाशय धर्मपाल** प्रधान **धर्मपाल गुप्ता** व.उ. प्रधान **जोगेन्द्र खट्टर** महामन्त्री (9810040982) **योगेश आर्य** कोषाध्यक्ष

प्रवेश सूचना

छात्रावास चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर, चन्द्र आश्रय गृह एवं चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर, देसराज परिसर ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली में निम्न आय वर्ग एवं निराश्रित बालिकाओं की छठी से 12वीं कक्षा तक की शिक्षा व पालन पोषण की नि:शुल्क उत्तम व्यवस्था है।ऐसे किसी भी निम्न आय वर्ग व निराश्रित बालिका का प्रवेश कराने के लिए सम्पर्क करें-

सुश्री विद्या एवं सुश्री अनुराधा
26316604, 26840229, 26846479

प्रवेश सूचना

आर्य बाल गृह, आर्य कन्या सदन एवं रानी दत्ता आर्य विद्यालय, वीरेश प्रताप परिसर, 1488, पटौदी हाउस, दरियागंज नई दिल्ली में निम्न आय वर्ग एवं निराश्रित बालक-बालिकाओं की नर्सरी से 12वीं कक्षा तक की शिक्षा व पालन पोषण की नि:शुल्क उत्तम व्यवस्था है। ऐसे किसी भी निम्न आय वर्ग व निराश्रित बालक/बालिका का प्रवेश कराने के लिए सम्पर्क करें-

गौरव पुरी नरेन्द्र शर्मा भीष्मपाल
23272084, 23260428, 23279593

शोक समाचार

माता पवन सूद जी का निधन

आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी नई दिल्ली की अन्तरंग सदस्या माता पवन सूद जी का 25 अप्रैल, 2019 को लगभग 82 वर्ष की आयु में निधन को गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ 26 अप्रैल, 2019 को तिलक विहार (साहिब पुरा) शमशान घाट पर किया गया।

उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा क 27 अप्रैल को गिरधारी लाल सभागार आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड में सम्पन्न हुई, जिसमें निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। माताजी को इस वर्ष 24 फरवरी को ही आर्य महिला रत्न के सम्मान से सम्मानित किया गया था।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 29 अप्रैल, 2019 से रविवार 5 मई, 2019

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 2-3 मई, 2019

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 1 मई, 2019

प्रो. महावीर जी राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित

संस्कृत शिक्षा जगत के ख्याति प्राप्त उच्चकोटि के विद्वान, पतंजलि विश्व विद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. महावीर जी को 4 अप्रैल 2019 को उपराष्ट्रपति श्री वैंकय्या नायडू जी के द्वारा राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्ति के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं।

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौंधा के संयुक्त के तत्त्वावधान में

नि:शुल्क योग साधना एवं स्वाध्याय शिविर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौंधा, देहरादून के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 27 मई से 2 जून 2019 तक गुरुकुल पौंधा में योग साधना एवं स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस स्वाध्याय के विषय पंचमहायज्ञ आदि होंगें। अपनी पुस्तक साथ लेकर जाएं अन्यथा वहां से खरीदनी पड़ेगी। शिविर पूर्णत: नि:शुल्क है। केवल आने-जाने का मार्ग व्यय खर्च होगा। ट्रेन से जाने वाले शिविरार्थी अपना रिजर्वेशन स्वयं करवा लें तथा सूचना दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा में अवश्य दे देवें। शिविर में रहने व भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से नि:शुल्क होगी। दिल्ली से रविवार दिनांक 26 मई 2019 को रात्रि में रवाना होंगे व रविवार 2 जून 2019 को पौंधा से वापसी होगी। शिविर में जाने के लिए सम्पर्क करें-

श्री सुखवीर सिंह आर्य, शिविर संयोजक,
मो. 09350502175, 07289850272

आर्य सभा मॉरीशस का निर्वाचन सम्पन्न

श्री हरिदेव रामधनी पुन: प्रधान निर्वाचित

आर्य सभा मॉरीशस का निर्वाचन 17 अप्रैल, 2019 को हुआ, जिसमें निम्नलिखित महानुभावों निम्न प्रकार चुना गया-

Representative of SAPS
Prof. Soodursun JUGESSUR,

Honorary Chairman
Dr. Roodrasen NEEWOOR

Arya Neta/Advisor
Dr. Oudaye Narain GANGOO

President
Shri Harrydev RAMDHONY

Vice President
Shri Satterdeo PEERTHUM
Shri Ravindrasingh
Smt. Me. Poornima Devi SOOKUN
TEELUCKDHARRY

Secretary
Shri Dharamveer GANGOO

Assistant Secretary
Dr. Jaychand LALLBEEHARRY
Shri Vijaye Anand RAMCHURN
Dr. Santee MOHABEER

Treasurer
Shri Rajendra Prasad RAMJEE

Asst. Treasurer
Shri Bholanath JEEWUTH
Shri Sanjit Kumar NUCKCHEDDY
Shri Sharandass BEHAREE

Library Manager
Shri Ravindradeo SEWPAL

Members **:**
Bisnoodave BISSESSUR,
Bhagwandass BOOLAKY,
Vedendranand Sharma CHUMMUN,
Dr. Rajnish NABAB, Dr.
Comalchandra RADHAKEESOON,
Smt. Danwantee RAMCHURN,
Pradeep RAMDONEE
Smt. Suttee RAMPHUL
Balchan TANAKOOR, &
Smt. Yalini Devi Rughoo YALLAPPA

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह